समाजशास्त्र
9/7/20

पंचम पत्र

BA III प्रतिष्ठा म

मैक्स वेबर का विधि शास्त्र
METHODOLOGY

Prepared:
Dr Arun Kumar Rooder
Asst. Prof. of Sociology
Shoneshar College
(Sasaram)

वेबर की ज्ञान मीमांसा (Epistemology) को समझने के लिए तत्कालीन समाज विज्ञानो मे विधिशास्त्र को लेकर जो विवाद हो रहा था उसकी पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है, वास्तव मे विधि सम्बन्धी यह विवाद जर्मनी मे बहुत तीव्र हो गया था। यहाँ समाज वैज्ञानिक इस विवाद को लेकर स्पष्ट: दो भागो मे बट गये थे ये अर्थशास्त्रियो, मनोवैज्ञानिको इतिहासकारो और दार्शनिको आदि से जुड़े थे। उस युग मे समाजविज्ञानो का इतिहास का स्थान अग्रणी था। सभी समाज वैज्ञानिको मे विवाद यह था कि क्या प्राकृतिक विज्ञानो की कोटि मे समाज विज्ञानो को भी सम्मिलित कर लेना चाहिए दूसरे शब्दो मे इतिहास, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को भी प्राकृतिक विज्ञानो यानि गणित, रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र की कोटि मे डाल देना चाहिए। बाद मे चलकर विवादग्रस्त इस मुद्दे ने एक नयी दिशा ले ली। यह कहा जाने लगा कि समाज विज्ञानो को एक स्वायत कोटि मे रखा जाना चाहिए। डिल्थे (Dilthey) का कथन था कि — प्राकृतिक विज्ञानो को विषय वस्तु प्रकृति है और इसलिये उनकी कोटि अपने आप मे पृथक होनी चाहिए। दूसरी ओर समाज विज्ञान मानव मस्तिष्क या इतिहास का अध्ययन करते है उन्हे पृथक कोटि से रखा जाना चाहिये।

आगे चलकर विन्डेलवेण्ड और रिकर्ट ने यह तर्क रखा कि विज्ञानो का वर्गीकरण उनकी अध्ययन विधि के आधार पर किया जाना चाहिए।

मैक्स वेबर ने जीवन पर्यन्त यह प्रयास किया कि समाज विज्ञानो मे इतिहास और समाजशास्त्र, विज्ञान की कोटि मे रखे जा सकते है। प्राकृतिक और समाज विज्ञानो जहाँ तक विधि और प्रविधि का प्रश्न है दोनो विज्ञान समान है। इन दोनो मे बुनियादी अन्तर यह है कि जहाँ प्राकृतिक - प्रघटनाओ का अध्ययन करते है

Scanned by TapScanner

वहाँ समाज विज्ञान संस्कृति का आख्यान करते हैं। दूसरा प्राकृतिक विज्ञान हर अर्थ में मूल्य तटस्थ होते हैं। इधर समाज विज्ञान कभी भी मुक्त नहीं होते। मूल्यों की उपस्थिति या अनुपस्थिति भी प्राकृतिक और समाज विज्ञान को बड़ी दूर के फासले पर खड़ा कर देती है। इन दोनों विज्ञानों में वेबर निश्चित रूप से प्रत्यक्षवादी नहीं थे। वे तो समाजशास्त्रीय प्रघटनाओं को मूल्यों के सन्दर्भ में देखते हैं। अन्त में चलकर वेबर ने परिमापन पद्धति को भी अस्वीकार किया है। परिमापन तो नाप तोल है इसका चरित्र गणितीय है। यदि समाजशास्त्री अनुसंधानकर्ता के अनुभव को वास्तविक रूप में समझना चाहते हैं तो ऐसी समझ में परिमापन स्पष्टता की अपेक्षा दुरूहता और भ्रम अवश्य पैदा करता है। इस विशेष के होते हुए भी वेबर को लगा कि यदि वास्तविक अनुभव को समझने में परिमापन उपयोगी है तो उसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

From.

Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram

Scanned by TapScanner